नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

युगांतकारी कवि थे मुक्तिबोध– अनूप कुमार
मुक्तिबोध की साहित्यिक दृष्टि पर रखे विचार
हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध और शमशेर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा, 24 मार्च 2017: कवि गजानन माधव मुक्तिबोध के काव्य में नवोन्मेषी दृष्टि थी, वे युगांतकारी कवि थे। उनका प्रभाव हिंदी समाज की चेतना में आज भी जीवित है। उक्त विचार सुविख्यात कवि तथा नागपुर मंडल के कमिश्नर अनूप कुमार ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग की ओर से 'हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध और शमशेर' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में 'मुक्तिबोध की साहित्यिक दृष्टि' विषय पर बोल रहे थे। विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में शुक्रवार को कवि मुक्तिबोध का मनोलोक और इंद्रिय बोध विषय पर आयोजित सत्र में डॉ. विनय कुमार, डॉ. वंदना खुशालानी, डॉ. एम श्याम राव, डॉ. पद्मप्रिया, डॉ. रमेश कुमार मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी एवं तुलनात्म क साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह ने किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अनूप कुमार ने मुक्तिबोध को अपनी कविता का प्रेरणास्रोत माना। उन्होंने कहा कि जब हमने 1980 से लिखना शुरू किया तब हमारी पीढ़ी के सभी लोगों पर मुक्तिबोध की कविताओं का प्रभाव पड़ा। इलाहाबाद एवं दिल्ली के साहित्य जगत में भी उनकी रचनाओं की गूंज थी। वे रचनात्मक बेचैनी को सरल तरीके से व्याख्यायित करते है। उनके काव्य में भारतीय समय व समाज का मंथन दिखाई देता है। उन्होंने माना कि हिंदी के तेवर बरकरार रखना है तो मुक्तिबोध को याद करना ही होगा।

सत्र में डॉ. विनय कुमार ने मुक्तिबोध के काव्य में मनोलोक को विस्तार से बताया। डॉ. वंदना खुशालानी का कहना था कि मुक्तिबोध की कविता में तेवर, कलेवर व फ्लेवर भी है। वे मराठी भाषी थे परंतु हिंदी के प्रति एक प्रतिबद्ध कवि थे। उन्होंने 'मुक्तिबोध के काव्य में जनवादी चेतना' विषय पर अपनी बात रखी। इस अवसर पर मंचासीन वक्ताओं ने समायोचित वक्तव्य दिये।

कार्यक्रम में प्रतिभागी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्यामें उपस्थित थे।